खण्ड- अ
(बहुविकल्पी / वस्तुपरक प्रश्न)

उत्तर- 1 (अपठित गद्यांश)

(i.) (B) हर प्रस्तुति में नवीनता

(ii.) (A) गुणोत्कर्ष

(iii.) (C) भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार लोकगीत है

(iv.) (A) लोकगीतों और प्रकृति में व्याप्त स्वरों के समन्वय द्वारा

(v.) (D) संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल परस्पर मिलते हो

(vi.) (B) आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर

(vii) (A) प्रकृति की विभिन्नता, सामयिकता और शाश्वतता के मिलने से

(viii) (A) लय

(ix) (B) लोकगीत और प्रकृति शास्त्रीय संगीत के आधार हैं

(x) (B) चिरस्थिरता एवं समसामयिकता का समन्वय

उत्तर-2 (काव्यांश)

(i) (C) परस्पर सौहार्द, अटल संकल्प, सहृदयता एवं उत्तरोत्तर उन्नति का

(ii) (A) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

(iii) (D) विविध धर्म, जाति एवं भाषा के एकत्व का

(iv) (A) निज दुर्बलताओं को पहचानकर सबलताओं में बदलना

(V.) (B) केवल कथन IV सही है।

* अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न

उत्तर: 03

(i) (B) आधुनिक युग में

(ii) (A) रेडियो

(iii) (C) फ्रीलांसर (स्वतंत्र पत्रकार)

(iv) (D) काव्यात्मक फीचर

(V.) (B) विशेष लेखन

* पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्न

उत्तर-4

(i) (C) दर्शक और विकलांग व्यक्ति के लिए

(ii) (D) मीडिया स्वार्थी एवं संवेदनहीन है, उसका सामाजिक सरोकार मात्र दिखावा है।

(iii) (A) परदे के पीछे की वास्तविकता

(iv) (B) संवेदनहीनता को

(v) (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है

उत्तर-05

(i) (B) मधुमास

(ii) (C) शिरीष के फल, फूल की तरह कोमल नहीं होते

(iii) ~~(C) शिरीष का पेड़~~ (D) शिरीष के फल

(iv) (A) फलों की मजबूती

(v) (A) जिसने जन्म लिया उसकी मृत्यु निश्चित है = भाव
जो फलेगा वह सड़ेगा, जो जलेगा वह बुझेगा = अर्थ

पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्न
उत्तर : 06

(i) (B) रेम्जे स्कूल, अल्मोड़ा

(ii) (D) कथन तथा कारण दोनों सही है, किंतु कारण कथन की की सही व्याख्या करता है

(iii) (B) कथन II सिंधु घाटी सभ्यता 'लो प्रोफाइल' सभ्यता थी

(iv) (B) जॉन मार्शल

(v) (A) सौंदर्य की वास्तविक अनुभूति तो प्रत्यक्ष दर्शन से ही होती है।

(vi) (A) उससे ईर्ष्या करना

(vii) (D) पार्टी में आए मेहमानों के बीच स्वयं को असहज महसूस करना

(viii) (A) मन की एकाग्रता से

(ix) (B) आत्मकथात्मक

(x) (C) अकेलापन उपयोगी है

खण्ड - 'ब'

उत्तर : 07

नारी सशक्तिकरण

वर्तमान में पुरुषों एवं स्त्रियों की समता का मुद्दा चर्चाओं में है। वर्तमान युग में नारी घर की चारदीवारी से बाहर निकल रही है। अब नारी घरों में बंद होकर घुटन महसूस नहीं कर रही है। नारी ~~देश,~~ घर, समाज, जिले, राज्य एवं देश का नाम रोशन कर रही है। इसका कारण है - 'नारी सशक्तिकरण'।

समाज की ऐसी व्यवस्था जहाँ पुरुषों एवं स्त्रियों को समान अवसर प्रदान करके, पहले की उपेक्षित नारी वर्ग, निरंतर परचम लहरा रहा है, आगे बढ़ रहा है, उसी को नारी सशक्तिकरण कहा जाता है। अब वह जमाना गया जब नारियों को घर के भीतर बंद रहना पड़ता था। वह समय गया जब नारियों को स्वतंत्रता नहीं थी कि वे अपने मर्जी से कुछ भी करे। अब तो यह युग नारी सशक्तिकरण का युग है। पहले के समय में इस समाज ने नारी को बेड़ियों

में बाँधकर रखा हुआ था। अब नारियाँ इन जंजीरो एवं बेड़ियों को तोड़कर आगे बढ़ रही है। आज देश का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ नारी न हो। शिक्षा, कृषि, व्यापार, मीडिया, सभी स्थान पर महिलाएँ आसानी से मिल जाती है। नारी अलग अलग क्षेत्र मे देश का नाम रोशन कर रही है। कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में उड़ान भरी। 2023 के टोक्यो ऑलंपिक्स में मीराबाई चानू ने देश का परचम लहराया। साक्षी मलिक ने कुश्ती मे नाम कमाया। कई महिलाओ ने समाज के उत्थान मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यहाँ तक की रक्षा के क्षेत्र से भी महिलाएँ अछूती नहीं है। एनडीए - राष्ट्रीय रक्षा अकादमी मे भी 2022 से महिलाओं के लिए भी पद निकाले जाने लगे है। देश की पहली महिला साइना ने रक्षाविमान उड़ाकर देश को ~~गौरवान्वित~~ ~~क~~ गौरव से भर दिया।

इस नारी सशक्तिकरण का मुख्य कारण है सभी सुविधाओं का नारियों द्वारा अत्याधिक उपयोग करना। अब सभी मातापिता को अपनी बेटियों पर गर्व महसूस होता है। भारत की नारियाँ इसी प्रकार नियमित विकास करते हुए निश्चित रूप से भारत को पूरे विश्व में सर्वोत्तम ~~क~~ स्थान पर लाएगी।

उत्तर : 08

(i) (क.) कहानी के कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिनमें में से कुछ समस्याएँ निम्नलिखित है -

(a.) कहानी में पात्रों के मनोभावों को अभिनय के प्रतिरूप में बदलने की समस्या।

(b.) पात्रों के संवादों को कहानी के मूल संवादों के साथ मेल करने की समस्या।

(c.) प्रकाश, ध्वनि प्रभाव, मंच सज्जा एवं कहानी के अनुकूल वातावरण तैयार करने की समस्या।

(d) पात्रों के आपसी द्वंद्व को अभिनय के माध्यम से अभिव्यक्त करने की समस्या।

(e.) कथानक एवं कहानी के उत्कर्ष (चरमोत्कर्ष), दृश्यों के बदलाव एवं उद्देश्य को अभिनय एवं भाव भंगिमाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करने की समस्या।

(ii) (ख) नाटक में 'दृश्य' की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दृश्य नाटक को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। नाटक मुख्य रूप से 'दृश्य' पर ही आधारित होता है। दृश्य के बिना नाटक की कल्पना करना भी अत्यंत कठिन है।

यदि हम एक ऐसे नाटक की कल्पना करे जिसमें दृश्य ही न हो। यदि दृश्य नहीं होंगे तो नाटकीय रंगमंच का कोई महत्व ही नहीं रहेगा। दृश्यों के अभाव में कथानक आगे ही नहीं बढ़ पाएगा। ऐसे नाटक का चरमोत्कर्ष, उद्देश्य जनता तक संप्रेषित करना असंभव सा हो जाएगा।

इस प्रकार नाटक में दृश्य अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।

उत्तर : 09

(क) टेलीविज़न जनसंचार का एक प्रमुख माध्यम है।

खूबियाँ :

(i) यह जनसंचार का दृश्य के साथ साथ श्रव्य माध्यम है।

(ii) दृश्यों के उपलब्ध होने के कारण जीवंतता का अहसास होता है।

(iii) दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों का स्मृति-पटल पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ये अधिक समय तक याद रहते हैं।

(iv) यह माध्यम साक्षरों एवं निरक्षरों दोनों के लिए लाभदायक है।

कमियाँ :

(i) दूरदर्शन पर प्रसारित किसी खबर या शब्द पर सोचने-विचारने एवं विश्लेषण करने का समय नहीं मिलता है।

(ii) इसमें समाचारों का स्थायित्व नहीं होता है। हम किसी समाचार या घटना (जो प्रसारित हुई है) को सहेजकर नहीं रख सकते हैं।

(iii) इसे हम कभी भी और कहीं भी प्रयोग नहीं कर सकते हैं।

(iv) प्रसारित खबरों को संदर्भ बनाकर रखना कठिन है।

10

(ख) पत्रकारिता के क्षेत्र में प्राय: संवाद दाताओं, रिपोर्टरों की अभिरुचि एवं कार्यक्षेत्र को ध्यान में रखते हुए, उनका अलग अलग क्षेत्रों में विभाजन किया जाता है। इसी विशेष क्षेत्र को बीट कहा जाता है।

* बीट के उदाहरण - खेल बीट, रक्षा बीट आदि।

बीट रिपोर्टिंग से तात्पर्य ऐसी रिपोर्टिंग से है जिसमें रिपोर्टर अपने विशेष क्षेत्र में घटी घटनाओं, सभी तथ्यपरक जानकारियाँ, समस्याओं आदि को जनसमूह तक पहुँचाता है। जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में रिपोर्टर अपने क्षेत्र विशेष की जानकारी अत्यंत गहराई के साथ, बिल्कुल तह तक जाकर जनसमूह को प्रदान करता है।
बीट रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं
विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहा जाता है।

उदाहरण : यदि आर्थिक क्षेत्र में कोई मंदी आई है, तो बीट रिपोर्टर केवल इसकी जानकारी तथ्यों के साथ देगा। लेकिन विशेष संवाददाता जानकारी के साथ साथ इस

मंदी के कारणों एवं जनता पर पड़ने वाले परिणाम इसकी मार एवं प्रभावों को भी साझा करेगा।

उत्तर : 10

(ख) 'कविता के बहाने' कुंवर नारायण जी द्वारा रचित 'इन दिनों' काव्य संग्रह से ~~लिया~~ ली गई है।
इसमें कवि कविता की तुलना क्रीड़ा करते बच्चों से करते हैं। वे कहते हैं कि जिस प्रकार बच्चे मदमस्त होकर सभी भेदभावों को भुलाकर, सभी घरों मे खेलते हैं, उसी प्रकार कविता भी शब्दों एवं विचारों का खेल ही है। कविता भी सभी भेदभावों को छोड़कर सभी को समान भाव से आनंद प्रदान करती है। कविता किसी जाति-पाँति, भेदभाव, ऊँच नीच का ध्यान नहीं करती है। वह तो समान भाव से मदमस्त होकर, लोगों के हृदयों को प्रफुल्लित करती रहती है।
ऐसा लगता है कि मानो बच्चों एवं कविता ने सब

घर एक कर दिए हो।

(ग) राम और रावण की सेनाओं का महाभयंकर युद्ध चल रहा था। इसी युद्ध में लक्ष्मण जी को मेघनाद ने शक्ति से मूर्छित कर देता है। सुषेन वैद्य जी द्वारा पता चलता है कि यदि प्रातः होने से पहले संजीवनी बूटी न लाई गई तो लक्ष्मण की मृत्यु हो सकती है।
अतः अपने प्रिय भ्राता लक्ष्मण की यह स्थिति देखकर युद्धभूमि में राम के खेमे का माहौल शोकग्रस्त था।
जैसे ही हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर पहुँचे तो सभी का करुण रस, वीर रस में परिवर्तित हो गया। संजीवनी बूटी द्वारा उपचार किए जाने से लक्ष्मण जी स्वस्थ हो गए। उन्हें देखकर सारी सेना में जोश एवं उत्साह का संचार हो गया। सभी श्री राम की जयजयकार करने लगे। सारे में उत्साह का माहौल छा गया। राम जी ने हनुमान जी को कृतज्ञता प्रदान की एवं गले से लगा लिया।

उत्तर- 11

(क) 'पतंग' कविता में कवि ने पतंग के माध्यम से बालमन की आकांक्षाओं का चित्रण किया है। पतंग उड़ाते बच्चे आनंद से प्रसन्न है।
"पतंगों के साथ- साथ वे भी उड़ रहे हैं" - इस कथन में वे शब्द बच्चों के लिए है जो पतंग उड़ा रहे हैं। पतंग उड़ाते बच्चे अपनी पतंग को आकाश के उस छोर तक उड़ाते हैं जहां तक एवं जिसके पार वे स्वयं जाना चाहते हैं। पतंगों के साथ साथ उनकी जीवन की इच्छाएँ, आकांक्षाएँ एवं उमंग भी उड़ रही है। वे हर्षोल्लास के साथ अपने सपनों को पतंग के माध्यम से आकाश में विहार कराते हैं।

(ख) 'बादल राग' कविता में कवि ~~ने~~ 'शमशेर ~~बहादुर जी~~' ने बादलों का क्रांति के रूप में पुकारा है। बादल क्रांति करके तप्त धरा को शांत करना चाहते हैं। तात्पर्य यह है कि बादल समाज में क्रांति लाकर शोषित वर्ग

को पनपने का अवसर देना चाहते हैं।
'अशनि - पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' पंक्ति के माध्यम से कवि ने संपन्न वर्ग एवं शोषण करने वाले वर्ग की ओर संकेत किया है।
जब बादलों की बिजली (अशनि) गिरती है तो बड़े बड़े शूरवीर काँप उठते हैं, चट्टाने खिसक जाती हैं। इस प्रकार संपन्न वर्ग भय के कारण काँप रहा है। अब तक उसने बहुत शोषण किया। किंतु अब स्थापित व्यवस्था के अंत का समय आ गया है।

उत्तर : 12

(ख) 'पहलवान की ढोलक' कहानी में पुरानी व्यवस्था एवं नई व्यवस्था के टकराव को व्यक्त किया गया है।
पुरानी व्यवस्था के अंतर्गत पहलवान लुट्टन सिंह को राज पहलवान घोषित किया गया था। सभी का पहलवानी में अत्यंत आकर्षण एवं मनोरंजन था। समाज में

पहलवानी अत्यंत प्रचलित थी। लुट्टन का खाने पीने का खर्च एवं अन्य व्यय राजकोष से चलता था। परंतु जब राजाजी की मृत्यु हुई एवं विलायती राजा को उत्तराधिकार मिला तो इतने अधिक व्यय को देखकर पहलवान लुट्टन सिंह को नकार दिया गया। सभी सुविधाएँ एवं आवास उससे छीन लिया गया। दूसरा समाज में मनोरंजन के अन्य साधन उपलब्ध होने के कारण पहलवानी को ध्यान कम मिलने लगा। इस प्रकार नई व्यवस्था के कारण पहलवान लुट्टन सिंह को निराशा हाथ लगी। उसे महल छोड़कर गाँव में एक झोपड़ी में जाना पड़ा

(क) 'बाजार दर्शन' पाठ में लेखक जैनेंद्र कुमार ऐसे बाजार को मानवता का लिए विडंबना मानता है जिसके उपभोक्ताओं की जेब भरी हो, एवं मन खाली हो। जब उपभोक्ता बिना किसी इच्छा के बाजार में जाता है, तो उस समझ नहीं आता कि वह क्या खरीदे।

अगर व्यक्ति की जेब भरी हो एवं मन खाली हो तो वह बाजार से अनावश्यक चीजे भी खरीद लेता है। कुछ व्यक्ति तो ऐसे होते है, जो अपनी क्रय शक्ति (परचेसिंग पावर) का प्रदर्शन करने के लिए बाजार जाकर न जाने कितनी वस्तुएँ खरीद लेते है। ऐसी व्यक्तियों मे तृष्णा, असंतोष एवं ईर्ष्या की भावना होती है। इनमे संतोष एव संयम का अभाव होता है। इस प्रकार बाजार को ये व्यक्ति ~~a~~ सार्थकता प्रदान नही कर पाते है। ये बाजार के बाजारूपन को बढ़ाकर ग्राहक एवं बेचक के आत्मीय संबंध एवं सदभावना को गिराते है। बाजार को लूटपाट से भर देते है। इस प्रकार के लोगो द्वारा प्रयोग मे लाया गया बाजार मानवता के लिए विडंबना है।

उत्तर : 13

(क.) भक्तिन एक स्वाभिमानी, संघर्षशील एवं सर्वोपरि एक स्वामिभक्त है। वह लेखिका का छाया बनकर रहती है। वह महादेवी वर्मा जी से दूर नहीं जाना चाहती है।

स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण उसे पता चलता है कि लेखिका को जेल जाना पड़ सकता है। इसपर वह प्रतिक्रिया करती है कि वह भी लेखिका के साथ उसकी सेवा एवं सुविधा के लिए जेल जाएगी। लेकिन इस प्रकार वह किसी के साथ जेल नहीं जा सकती। इसलिए वह शासन, पुलिस, जेलकर्मी से भी लड़ने को तैयार है। वह लेखिका से अत्यंत गहरा लगाव रखती है। वह भी लेखिका के साथ जेल जाना चाहती है।

(ख)

↳ 'काले मेघा पानी दे' पाठ में लेखक मेंढक मंडली पर पानी डालने को लेकर जीजी के विचारों से सहमत नहीं है। वह आर्यसमाजी है। वह इन परंपराओं को नहीं मानता। साथ ही वह कुमार सुधार सभा का उपमुख्य भी है जो कि इस तरह के अंधविश्वासों को नष्ट कराने एवं करने का उद्देश्य रखती है। वह इस तरह पानी डालने को पानी की निर्मम बर्बादी मानता है। उसका यह मत है कि यदि यह इंद्रसेना इंद्र देवता से वर्षा करा सकती है

तो अपने लिए जल क्यों नहीं माँग लेती।

उत्तर:14

(ख) 'जूझ' कहानी में दत्ताजी राव सरकार ने लेखक की पढ़ाई जारी रखने में अत्यधिक प्रयास किया। उन्होंने लेखक की सभी समस्याओं को जाना कि किस प्रकार उसका दादा (पिता) उसे खेती के काम में जोतकर रखता है। उसे विद्यालय नहीं जाने देता। फिर उन्होंने लेखक के पिता जी बुलाकर डाँटा और कहा कि 'तेरे बच्चे कुछ ज्यादा हो गए हैं'। दत्ताजी ने लेखक के पिता को फटकारा और लेखक को स्कूल भेजने का आदेश दिया। उन्होंने लेखक से कहा कि तू कल से स्कूल जा। मास्टर की सारी फीस भर दे। किसी भी प्रकार साल न मारा जाए। इस प्रकार दत्ताजी ने लेखक के पिता को मजबूर करके उसे स्कूल भेजने का प्रयत्न किया।

(ग) मुअनजो-दड़ो की गलियों एवं घरों में घूमते हुए लेखक ओम थानवी जी को राजस्थान की याद आ गयी। सिंध एवं राजस्थान में अनेक समानता है। दोनो जगह वहीं धूल, बबूल, अत्यधिक गर्मी एवं अत्यधिक सर्दी। वहाँ की मिट्टी भी राजस्थान से मेल खाती है। लेखक को राजस्थान के कुलधरा की याद आ गई। वहाँ भी वैसे ही पीले पत्थर मिलते हैं जैसे सिंध में। वहाँ का एक गाँव भी ऐसा ही वीरान एवं शांत, अवशेष छोड़े हैं जैसे ~~मोऊ~~ मुअनजो-दड़ो के घर एवं गलियाँ हैं। कुलधरा के लोग भी स्वाभिमानी थे और ऐसी आशंका लगाई जाती है कि सिंध के लोग भी स्वाभिमानी थी।